गरिमा

आज की बेटी – कल की नारी

परिचय–

भारत में लगभग 1.15 करोड़ किशोरियों का एक विशाल वंचित समूह है, जिनकी न केवल सामाजिक स्थिति दयनीय है बल्कि उनकी शिक्षा, पोषण व स्वास्थ्य विशेषकर प्रजनन स्वास्थ्य की दशा भी चिंतनीय है। किशोरियो में पहली माहवारी होना उनके जीवन चक्र में एक मील का पत्थर होता है। यह **''किशोरी से स्त्री बनने की ओर पहला कदम है''**। इसलिए माहवारी एवं उससे जुड़ी साफ–सफाई के समुचित प्रबंधन की जानकारी, किशोरियों के प्रजनन स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है। गॉव स्तरीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता भी मासिक चक्र के दौरान होने वाले मानसिक एवं शारीरिक परिवर्तनों को पूरी तरह नहीं जानते हैं। वे माहवारी के दौरान साफ सफाई, कपड़े/नैपकिन के उपयोग, व्यवहार एवं निस्तारण प्रबंधन के बारे में किशोरियों को उचित सलाह देने में पूर्ण सक्षम नही है।

यूनिसेफ द्वारा पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन जनपदों में कराये गये एक सर्वेक्षण से पता चला है कि किशोरियां, उनकी माताओं, आशा व ऑगनवाडी कार्यकर्त्री और स्कूल के शिक्षक सभी में माहवारी और उसके प्रबंधन के बारे में जानकारी की कमी है। साथ ही अधिकतर लोगों का मानना है कि माहवारी वाला खून गंदा होता है। माहवारी का अर्थ है शरीर से गंदा खून निकलना आदि। किशोरियों और उनकी मॉ में भी इस विषय पर खुलकर बात नहीं होती। किशोरियॉ आशा व ऑगनवाडी कार्यकर्त्री से इस विषय पर बातचीत करने में सहज नहीं महसूस करती। माहवारी का असर लड़कियों के नियमित स्कूल जाने और सामान्य जीवन जीने पर भी पड़ता है।

गरिमा कार्यक्रम–

माहवारी स्वच्छता से संबंधित तथ्यों को ध्यान में रखते हुए तथा माहवारी को लेकर समाज में प्रचलित धारणाओं व परंपराओं और किशोरियों व महिलाओं पर समाज द्वारा थोपे जा रहे प्रतिबंधों को लेकर यूनिसेफ और आइकिया फॉउण्डेशन द्वारा साथ मिलकर ''गरिमा कार्यक्रम'' का संचालन किया जा रहा है।

इस परियोजना का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के मीरजापुर, जौनपुर और सोनभद्र जिलों में 10–19 वर्ष की ग्रामीण किशोरियों, जिनकी माहवारी शुरू हो चुकी है या होने वाली है, को मासिक स्वच्छता प्रबंधन अपनाने में मदद करने के लिए एक सामाजिक एवं व्यवहारिक परिवर्तन संचार (Social and Behaviour Change Communication - SBCC) की कारगर रणनीति को विकसित कर लागू करना है जिससे वे माहवारी चक्र के दौरान होने वाली शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं, साफ–सफाई, और सामाजिक प्रतिबंधों के बारे में अपनी माताओं, ग्राम स्तरीय स्वास्थ्य कार्यकताओं और अध्यापिकाओं के साथ बातचीत करने में सक्षम हो सकें।

इसके लिए ग्राम स्तरीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, अध्यापिकाओं, एवं सामुदायिक संगठनों/समितियों जैसे, मातृ समूह, बाल संरक्षण समिति, महिला मंडल, किशोरी समूह, स्व सहायता समूह, स्कूल प्रबंधन समिति आदि को बदलाव लाने हेतु माध्यम बनाया जायेगा। यह परियेाजना पूर्वी उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जनपद में प्रारम्भ की गई है, तथा अन्य दो जनपदों – जौनपुर एवं सोनभद्र में 2014 तक इसे प्रारम्भ करने हेतु जोर–शोर से प्रयास किया जा रहा है।

पहुंच:

- पूर्वी उत्तर प्रदेश के 3 जिलो मीरजापुर, जौनपुर एवं सोनभद्र के 5000 गांव।
- 10 से 19 वर्ष की 200,000 किशोरियां
- 10–19 वर्ष की किशोरियों की 65,000 मातांए
- 5000 ग्राम स्तरीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता

इस परियोजना का लक्ष्य है माहवारी के मुद्दे पर सामाजिक चुप्पी को तोड़ना। इस परियोजना को दो संभावित उपलब्धियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। पहला – माहवारी से जुड़ी हुई झिझक और असहजता को खत्म या कम करने के लिए सामाजिक एवं व्यवहारिक परिवर्तन संचार (SBCC) के प्रभावी मॉडल का निर्माण करना और दूसरा – ऐसी किशोरियों की संख्या को बढ़ाना जो माहवारी और मासिक स्वच्छता प्रबंधन के महत्व और उपयोगिता को समझती हों।

इस परियोजना के तहत दो परिणामों की अपेक्षा की गयी है –

परिणाम 1 – परियोजना से जुड़े गॉवों में 10–19 वर्ष की किशोरियॉ –

(क) माहवारी क्या होती है और मासिक स्वच्छता प्रबंधन के तरीकों को अपनाने के महत्व को समझ सकें।

(ख) माहवारी से सम्बन्धित मुद्दों पर पीयर एजूकेटर और ग्राम स्तरीय स्वास्थ्य कार्यकताओं से सहज होकर बात कर सकें।

(ग) अपनी माहवारी को लेकर घबराए नहीं और इसके बारे में खुलकर बात कर सकें।

(घ) मासिक स्वच्छता प्रबंधन के साधनों (जैसे, सेनिटरी नैपकिन) के बारे में जानें और यदि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो तो उपयोग कर सकें।

परिणाम 2 – आशा, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री, अध्यापिकाओं, किशोरियों की माताओं और गॉव की अन्य महिलाओं को माहवारी से संबंधित विषयों में सलाह–मशविरा (अंतर्वैयक्तिक संचार) करने पर क्षमता वृद्धि करना ताकि वे माहवारी से संबंधित साफ–सफाई और प्रबंधन को बढ़ावा दे सके।